वार्ताकार

जुलाई, 2018

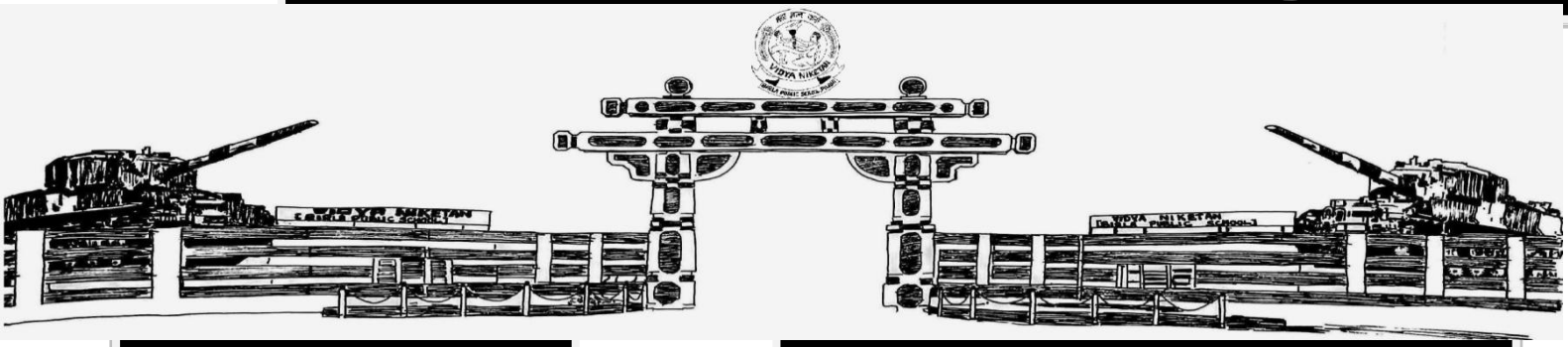

संपादकीय

गत– विगत मास विद्यालय के छात्रों के लिए विविधताओं से परिपूर्ण रहा। जहाँ एक ओर अधिकतर विद्यार्थी अपना समय परिवार के साथ व्यतीत कर रहे थे और ग्रीष्मावकाश का आनंद उठा रहे थे, वहीं दूसरी ओर 31 छात्रों का समूह सात समुंदर पार अमेरिका देशाटन कर रहा था और वहाँ स्थित नासा को सूक्ष्मता से जान रहा था। वहाँ सर्वसुलभ सुविधाएँ मन मोह रही थी और भौतिकता की धरित्री पर मादकता का नंगा नाच मस्तिष्क पर तांडव कर रहा था। दोनों संस्कृतियों का द्वन्द्व मानस– सागर में तंरगें आलोड़ित कर रहा था। विलासिता से परिप्लुत, उन्मुक्त विचार, कर्मठ कार्यशैली, अनुशासित दिनचर्या, उपभोगक्तावादी परिप्रेक्ष्य और स्वच्छंदाचार अभिव्यक्ति मानो मानव जाति की मानसिकता को मुखरित कर रही थी।

ग्यारह दिन रेत की तरह कब फिसल गए, पता ही न चला। आरामदेह बिस्तर कब तंबुओं में परिवर्तित हो गए, पता ही न चला। हवाई जहाज की आरामदायक यात्रा कब बस की सीटों में बदल गई, पता ही न चला। हवाओं की अशांति से धक्के कब टूटी– फूटी सड़कों के धचकों में तब्दील हो गए, पता ही न चला। वातानुकूलित कमरों की सुगंधित हवा कब हिमवात में परिवर्तित हो गयी, पता ही न चला। पता तो तब चला, जब साँस लेने में कठिनाईं होंने लगी और इस समय तक हम लेह पहुँच चुके थे। और, जब आँख खुली तो अहसास हुआ कि बीस दिन प्रकृति की गोद में खेलकर हमने 18, 300 फीट ऊँचाई तक साईकिल यात्रा कर एवं सफलता पूर्वक लक्ष्य प्राप्त कर, विद्यालय के इतिहास के अमिट पन्नों में एक अभिनव कीर्तिमान चिह्नित कर दिया है।

अस्तु! गुरू पूर्णिमा के अवसर पर श्रद्धावनत हुआ मैं, समस्त गुरूओं को प्रणाम करता हुआ, यह विशेषांक उनके चरणारविन्दों में समर्पित करता हूँ। उन्हीं के पुण्य प्रताप एवं आशीर्वाद से माँ शारदा से किंचित् अनुकंपित हुआ मैं सभी गुरूओं के प्रति विनम्रता पूर्वक कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ। आज भी उनके लाड़–प्यार– दुलार और लताड़ को स्मरण करता हुआ, स्वयं को अबोध, हठी और अज्ञानी समझने लगता हूँ। अतीत के झरोखे से उनका वात्सल्य और प्रेम देखकर, उनकी स्मृति मुझे आज भी यकायक दोबारा बच्चा बनने पर लाचार कर ही देती है। धन्य हैं ऐसे गुरू जो स्वयं एक ही जगह प्रतिष्ठित रहकर अपने शिष्यों का मार्ग प्रशस्त करते हैं। परन्तु कभी– कभी आजकल की बदलती शिक्षा व्यवस्था को देखकर क्षोभ भी होता है। आशावादी हूँ , इसलिए खीझ को बोझ नहीं बनने देता, व्यवहारवादी हूँ इसलिए कटु अनुभवों को विस्मृत कर नव सिंचित आशा को गले लगा ही लेता हूँ। मुझे विश्वास है कि वार्ताकार के इस विशेषांक में सुधी पाठक लेख के मर्म को समझेंगे और भविष्य के निर्माण में अपना सहयोग अवश्य देंगे।

उपलब्धियाँ

- विद्यालय ने छात्रों के लिए दिनांक 7 जून से 19 जून 2018 तक अमेरिका देशाटन का आयोजन किया। जिसमें नासा फ्लोरिडा, बफलो, वाशिंगटन डी0 सी0, निआग्रा फॉल्स्, न्यूयार्क आदि शहरों के भ्रमण के अतिरिक्त शैक्षिक यात्रा का आनंद उठाया। छात्रों के साथ डॉ0 अभिनव शुक्ल, श्री जसकरण सिंह एवं श्री रविकांत मिश्र इस अविस्मरणीय यात्रा के साक्षी बने।
- विद्यालय के इतिहास में पहली बार 15 छात्र, प्रधानाध्यापक डॉ0 अभिनव शुक्ल एवं श्री विजय सिंह राठौड़ के नेतृत्व में मनाली से लेह तक रोमांचक साईकिल यात्रा का आयोजन किया गया। जिसमें 12 वर्ष की अल्पायु से लेकर 17 वर्ष की आयु के छात्रों ने लगभग 585 किलो मीटर तक एवं 18,300 फीट तक ऊँचाई पर साईकिल चलाकर नवीन कीर्तिमान स्थापित किया। इस अभियान दल ने जहॉ एक ओर सुविख्यात वैज्ञानिक श्रीमान सोनम वांगचुक के साथ समय व्यतीत किया वहीं आई0 टी0 बी0 पी0 लद्दाख क्षेत्र के डी0 आई0 जी0 एवं विद्यालय के भूतपूर्व छात्र श्रीमान जयपाल यादव ने इस साहसिक दल का लेह में सामूहिक अभिनंदन किया। यह अभियान दल भारत– पाकिस्तान सीमा पर स्थित बटालिक सेक्टर में भी गया, जहॉ 192 ब्रिगेड के ब्रिगेडियर कमांडर एवं विद्यालय के पूर्व छात्र रहे श्रीमान योगी श्योराण ने भी इस दल को सम्मानित किया।
- दिनांक 26 जुलाई 2018 को अंतर्सदनीय वक्तृता कौशल के अन्तर्गत गद्य और पद्य विधाओं को प्रस्तुत किया गया, जिसमें महावीर सदन के राजन चौधरी को काव्य पाठ में प्रथम और बुद्ध सदन के कार्तिक अग्रवाल गद्य पाठ में प्रथम स्थान प्राप्त हुआ।
- अन्तर्सदनीय हेंड बॉल प्रतियोगिता में प्रथम स्थान दयानंद सदन, द्वितीय स्थान बुद्ध सदन एवं तृतीय स्थान गुरूनानक सदन ने प्राप्त किया।
- विद्यालय में नेल्सन् मंडेला के 100 वें जन्मदिवस के उपलक्ष्य में विश्व शांति दिवस का आयोजन किया गया, जिसमें बिरला शिक्षण संस्थान के सभी विद्यालयों ने भाग लिया। कार्यक्रम में लघु नाटिका के अतिरिक्त नेल्सन् मंडेला के जीवन के विभिन्न पहलुओं के विषय में विस्तृत जानकारी दी गई।
- दिनांक 22 जुलाई से 28 जुलाई 2018 तक साइबर सुरक्षा सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसके अन्तर्गत पोस्टर मेकिंग प्रतिस्पर्द्धा, ऑन लाईन प्रश्नोत्तरी, विशेष कार्यक्रम तथा आई0 सी0 टी0 विभागाध्यक्ष श्री देवेन्द्र गुप्ता द्वारा अभिभाषण का आयोजन किया गया।
- दिनांक 26 जुलाई को विशेष प्रार्थना सभा का आयोजन किया गया, जिसमें कारगिल के शहीदों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई।
- दिनांक 28 जुलाई 2018 को 28 छात्रों ने दिल्ली विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित त्रि–दिवसीय युवा संसद सभा में भाग लिया, जिसमें संविधान, संसद की गतिविधियों एवं उसकी कार्यशैली के बारे में जाना।
- दिनांक 31 जुलाई 2018 को मध्य–विभाग में इंगलिश एलोक्यूशन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। गद्य वाचन में प्रथम स्थान अंशुल यादव द्वितीय स्थान नयनम् शर्मा और तृतीय स्थान सौभाग्य अग्रवाल ने प्राप्त किया। इसके अतिरिक्त काव्य पाठ के अंतर्गत प्रथम स्थान ईशान धर द्वितीय स्थान प्रवीर संधू और तृतीय स्थान प्रथम ने प्राप्त किया।

गुरू पूर्णिमा विशेषांक

दोष किसे दें ?

लिखना मेरी आदत में शुमार रहा है, पर कुछ व्यस्तताओं के कारण इस व्यसन से दूर होता गया हूँ। कुछ दिनों से मन अशांत और व्याकुल है। कारण यह है कि मैं और मेरे जैसे अनेकानेक लोग जो शिक्षा से संबंध रखते हैं और जिनकी आजीविका समाज को शिक्षित करने से चलती है; आज उन पर देश और दुनिया की नज़र है और शिक्षक वर्ग उनसे अपनी नज़रे चुरा रहा है। उत्कृष्ट वृत्ति के धारक इस शिक्षक वर्ग के सामने एक अनुत्तरित प्रश्न आकार ले रहा है। समाज का निर्माण करने के लिए प्रतिबद्ध, भविष्य का निर्माणकर्ता, स्वयं को जलाकर दूसरों को प्रकाश देने के लिए वचनबद्ध, अज्ञान रूपी तिमिर को ज्ञान रूपी आलोक से दूर करता हुआ शिक्षक वर्ग आज दुनिया में उपेक्षित सा दीख रहा है। ऐसा जान पड़ता है मानो लोग उससे कुछ प्रश्न करना चाहते हैं और वह उन प्रश्नों का सामना करने में अक्षम है। मेरा मन अत्यंत क्षुब्ध और विक्षिप्त सा हो रहा है क्योंकि मैं भी शिक्षक हूँ।

कारण, यमुनानगर निवासी एक प्रिंसीपल महोदया को एक विद्यार्थी ने अपने पिता की रिवाल्वर से गोली मार दी। इसका दोष आप उस नाबालिग बच्चे को देंगे या फिर उसकी सोच को ? हो सकता है इसका दोष आप उसकी युवावस्था को दें और या फिर उसके संस्कारों को ! मनोवैज्ञानिक हो सकता है इस हत्या को क्षणिक आवेश का नाम दे दें, शायद बाल–मानवाधिकारी इसे गंभीर आरोप मानकर उसे कुछ वर्ष के लिए बाल–सुधार गृह में डालने की पैरवी करें। तर्क–वितर्क, खंडन– मंडन करने में कुशल शिक्षाविद् एवं वाग्देवतावतार रूपी समाजसुधारक एवं नेतागण इस पर भी टेलीविज़न पर बहस करने पर पीछे नहीं हटेंगे और पूर्वाग्रह से ग्रसित कुछ पत्रकार महोदय इस बर्बर हत्याकांड पर मिर्च–मसाला लगाकर पाठकों के सामने प्रस्तुत करने में कदापि संकोच न करेंगे।

दोष किसे दें ? गंभीर चिंतन का विषय है। समाज को ? उस बालक के परिवेश या संस्कार को ? आजकल की शिक्षा व्यवस्था को ? उत्तरोत्तर नैतिक मूल्यों के विघटन को ? मूल्य विहीन परंतु अर्थकरी शिक्षा को ? शिक्षक एवं विद्यार्थियों के संबंधों को ? या फिर पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण को ? विपक्षी दल निःसंदेह सरकार की शिक्षा– नीति को ही कटघरे में खड़ा करेगा । **दोष किसे दें –** प्रश्न अब भी अनुत्तरित है। सुधी पाठकों से विनम्र निवेदन है कि आप स्वयं ही इस प्रश्न का हल खोंजे क्योंकि मैं अपना मत आप पर नहीं थोपना चाहता और ना ही मैं किसी वाद–विवाद में पड़कर अपना और आपका समय नष्ट करना चाहता हूँ। इस अनुत्तरित प्रश्न का सकारात्मक हल या उत्तर समाज में आशा की लौ जलाएगा और भविष्य में ऐसे हादसों पर लगाम लगाएगा, ऐसा मेरा मानना है।

मुझे स्मरण आ रहा है एक वैदिक मंत्र, जो हमारी शैक्षिक–नीति की आधारशिला थी और गुरू– शिष्य परंपरा को मुखरित करने वाला यह आप्तवाक्य हमारी शिक्षा व्यवस्था को दशो दिशाओं में उद्धोष करता था, जिसकी प्रतिध्वनि तक्षशिला से लेकर नालंदा तक सुनी जा सकती थी। विश्वगुरू अभिधान से गुंजित भारत तथा

भारतीय शिक्षा व्यवस्था को परिभाषित करता यह मंत्र सार्वकालिक, सार्वभौमिक है –

ऊँ सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै

तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्वषावहै।। ऊँ शांतिः शांतिः शांतिः।।

अर्थात्, ईश्वर हमारी (गुरू और शिष्य) की रक्षा करें, हम (गुरू और शिष्य) दोनो एक साथ भोजन करें, हम दोनो (गुरू और शिष्य) शक्ति प्राप्त करें, हम दोनो (गुरू और शिष्य) एक साथ तेजस्वी बने, हम कभी भी एक दूसरे से द्वेष ना करें। ऊँ शांति शांति शांति।।

शिक्षा का उद्देश्य एवं लक्ष्य सर्वप्रथम नैतिक मूल्य संपन्न श्रेष्ठ नागरिक का निर्माण होना चाहिए। मात्र पाठ्यक्रम को संपूर्ण करना ही शिक्षक एवं शिक्षा का उद्देश्य नहीं होना चाहिए, अपितु, विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर ही पाठ्यक्रम, पाठ्यचर्या एवं दिनचर्या का निर्धारण करना चाहिए। विद्यार्थियों में ऊहापोह, तर्क– वितर्क, तथा पक्ष– विपक्ष के प्रति नीरक्षीर विवेकी योग्यता का विकास होना चाहिए। सही– गलत, अच्छे– बुरे की सोच को विकसित कराना चाहिए। सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक ज्ञान के निर्णय की क्षमता का संचार होना चाहिए। दूरदर्शिता, सकारात्मक तथा समन्वयात्मक दृष्टिकोण, सहिष्णुता तथा उदारता जैसे गुणों को पल्लवित करने वाली शिक्षा व्यवस्था निःसंदेह एक मज़बूत देश का निर्माण करेगी।

गुरू– शिष्य परंपरा को और अधिक सुदृढ़ बनाने के लिए शिष्य के प्रति प्रगाढ़ वात्सल्य तथा स्नेह होना अत्यंत आवश्यक है। विद्यार्थियों के प्रति संवेदना, सहानुभूति रखना अनिवार्य है। शिक्षक को विद्यार्थियों की आयु को ध्यान में रखकर संवाद स्थापित करना चाहिए। कक्षा पाँच और कक्षा बारहवीं के विद्यार्थियों को विभिन्न प्रकार से संबोधित करना चाहिए। नौजवानों में अहं की भावना बलवती होती है, इस अहं के दुष्प्रभाव से, अदूरदर्शिता के कारण और अनुभवहीनता से ग्रसित यह युवावस्था किसी भी दुष्परिणाम से अनभिज्ञ होती है। अविवेकी तथा मदान्ध इस अवस्था में बालक की स्थिति अत्यंत दयनीय सी होती है। वह दिवास्वप्न में खोया सा रहता है। वह स्वयं को अत्यंत बलिष्ठ, सर्वज्ञ तथा समस्त क्षेत्र में सर्वश्रेष्ठ मानता हुआ एवं अनुत्तरित प्रश्नों का हल खोजता हुआ जीवन यापन करता है। कुतर्को में कुशलता हासिल करने में ऐसा महारथी समय पड़ने पर अपने माता– पिता की भी टोपी उछालने में कसर नहीं छोड़ता। शिक्षक वृन्द की अनदेखी और माता– पिता का नज़र अंदाज करना उस बालक को और अधिक गहरी खाई में डालने का काम करता है। अभिभावकों एवं शिक्षकों का सामूहिक तथा निरंतर परामर्श ही ऐसे बालकों के लिए डूबते को तिनके का सहारा सिद्ध होता है।

शिक्षक को बाल– मनोवैज्ञानिक होना आवश्यक है। बाल मन चंचल, अहंकारी, पूर्वाग्रही, हठी, मतलबी, चालाकी से काम निकलवाने में निपुण और अत्यंत अस्थिर होता है। बालकों को हमेशा फटकारने से उनका मन विद्रोह करने लगता है। उनकी बातों में दिलचस्पी न लेने के कारण या उनको समय न देने से वे स्वयं को शिक्षक वृन्द अथवा अभिभावकों से अकारण ही द्वेष करने लग जाते हैं। सार्वजनिक रूप से विद्यार्थियों का अपमान करने से उनके मन में हमारे प्रति घृणा एवं ग्रंथि बन जाती है, जो कभी भी क्रोध का आकार ले सकती है। विद्यार्थियों को डाँटने से पहले उनकी गलती का अहसास कराना आवश्यक होता है। शिक्षक के दृष्टिकोण में बहुत बड़ा अपराध उस बालक की दृष्टि में सामान्य सी गलती होती है। इसके साथ क्षमा करने की आदत शिक्षकों को अत्यंत आदर दिलाती है। विद्यार्थी ऐसे उदार चरित शिक्षकों को आजीवन स्मरण रखते हैं जिनका हृदय विशाल हों और विद्यार्थियों से मित्रता का व्यवहार रखते हों तथा समय– समय पर अपना अनुभव उनको बताते हों, उनकी सहायता करते हों, उनकी परेशानियों को दूर करते हों, उनको समय– समय पर धैर्यपूर्वक सुनते हों और विद्यार्थियों की व्यक्तिगत, निजी, पारिवारिक एवं गोपनीय बातों को कभी भी अभिव्यक्त न करते हों।

रामचरित मानस के उत्तरकांड में कलयुग वर्णन के अंतर्गत एक उक्ति आजकल शिक्षा व्यवस्था पर चरितार्थ सी होती दिखाई दे रही है–

" गुरू सिष बधिर अंध का लेखा, एक न सुनहि एक न देखा।

हरहिं शिष्य धन शोक न हरई, सो गुरू घोर नरक महुँ परईं।।"

अर्थात् कलयुग में ऐसा समय आएगा जब गुरू और शिष्य बहरे और अंधे के समान होगा। एक सुनेगा नहीं और दूसरा देखेगा नहीं। गुरू शिष्य का धन का तो हरण करेंगे परंतु उनके शोक का नहीं और ऐसे गुरू मृत्यु पश्चात् घोर नरक को प्राप्त होंगे। ' ट्यूशन ' करना अनुचित नहीं परंतु कक्षा में विद्यार्थियों को जानबूझकर न पढ़ाकर उसी विषय को प्रच्छन्न रूप से पढ़ाना और भय–दोहन या ब्लैकमेल करना सर्वथा अनुचित और शिक्षण के विरूद्ध है। यह शिक्षण जैसे उत्कृष्ट अध्यवसाय को निकृष्टता की ओर ले जा रहा है। बालक शैक्षिक वातावरण तथा परिवेश का समीचीन समीक्षक, पर्यवेक्षक, आलोचक एवं विवेचक होता है। तकनीकी विज्ञान से ओत–प्रोत आज के विद्यार्थी में भले ही दूरदर्शिता ना हो, परंतु उसमें अत्यंत भावुकता का गुण सनातन है। भौतिकतावादी परिवेश में पला बढ़ा और 21 वीं शताब्दी का विद्यार्थी पैसे के लेन– देन में फूंक– फूंककर कदम रखता है। वह भली– भाँति जानता है कि किसको, कैसे और किस प्रकार वश में करना चाहिए। इस आयु का विद्यार्थी समाज में होने वाले आर्थिक भ्रष्टाचार को अच्छी तरह से जानता है। कुछ शिक्षक धनलोलुपता के कारण हमेशा ऐसे विद्यार्थियों की दृष्टि में एक हीन और तुच्छ शिक्षक बनकर रह जाते हैं, जिनके कारण अन्य गुरूओं के प्रति भी उनकी धारणा वैसी ही बन जाती है। जो कि एक शोचनीय विषय है।

विश्व के सबसे बड़े लोकतांत्रिक देश भारत में विभिन्न केंद्र सरकारों की सोच एवं उनका चिंतन पाठ्यक्रम को प्रभावित करता दिखाई पड़ता है। शिक्षक और विद्यार्थी किंकर्तव्यविमूढ़ से नज़र आते हैं। इतिहास की दुर्गति और उससे छेड़छाड़–क्या सही है क्या गलत ? कौन जाने ?

आज भारत में विद्यालयों की संख्या द्रुतगति से बढ़ रही है, लगभग सभी विद्यालय आतंरिक और बाह्य ढॉचे तथा सुख– सुविधाओं पर तक ही सीमित हैं। भौतिकवादी और उपभोक्तावादी संस्कृति के चलते ग्राहक रूपी यजमान को आकर्षित करने की श्रृंखला में विद्यालय अभिभावकों के समक्ष सभी सुख– सुविधाओं का ऐसा खाका खींचते है जिससे माता– पिता अभिभूत होकर अपने बच्चे को प्रवेश दिला देते हैं। तथा– कथित ऐसी शिक्षा की दुकानों में चरित्र– निर्माण के अतिरिक्त खोखली शिक्षा से विद्यार्थी का निरंतर नैतिक पतन होता रहता है। ऐसे प्रतिष्ठानों में प्रायः प्रबंधको का आदेश रहता है कि विद्यार्थी की शिकायत कम से कम अभिभावकों से की जाए। शिक्षक भी अनुशासनहीनता के कारण उद्विग्न होकर विद्यार्थियों को अनदेखा करना प्रारंभ कर देते हैं। विद्यार्थियों को अनदेखा करना उनको नष्ट करना एवं आत्मघाती बनाना है। प्रश्न अब भी अनुत्तरित ही है। **दोष किसे दें ?** क्योंकि विद्यालय चलाने के लिए आर्थिक तंत्र को मज़बूत बनाए रखना अति आवश्यक है, वरना शिक्षक का वेतनमान कहॉ से आए ? ग्राहक और यजमान को तो आकर्षित करना ही पड़ेगा। विज्ञापन तो देने होंगे ही, विद्यालय जो चलाना है।

कुछ लोग बालक के परिवेश, पारिवारिक वातावरण और तथा– कथित संस्कार का रोना रोते नज़र आएँगे। उधर मीडिया को बहस का मुद्दा मिल जाएगा। सत्तारूढ़ और विपक्षी दल स्वयं को सर्वगुण संपन्न दिखलाने में कोई कसर नहीं छोड़ेंगे। शिक्षाविद् शैक्षिक जगत की कमियों को उजागर करेंगे। बाल– मनोविज्ञानी अपने सिद्धांतों की गठरी दूसरे के सिर पर फोड़ेंगे और शिक्षक वृन्द को धता बताकर स्वयं को श्रेष्ठतम सिद्ध करने का प्रयास करेंगे। प्रश्न अब भी अनुत्तरित ही है। **दोष किसे दें ?**

गुरू गोविन्द दोऊ खड़े काके लागूं पॉय।

बलिहारी गुरू आपने गोविन्द दियो बताय।।

गुरू का स्थान ईश्वर से भी ऊँचा माना गया है इसलिए गुरू को भी मर्यादित व्यवहार करना चाहिए। अपनी प्रतिष्ठा– सम्मान से कभी भी समझौता नहीं करना चाहिए। स्वयं को आदर्श रूप में विद्यार्थियों के समक्ष प्रस्तुत करना चाहिए। ठीक इसी प्रकार विद्यार्थियों एवं अभिभावकों को गुरू की महिमा और गरिमा का ज्ञान होना चाहिए। गुरू को ब्रह्मा, विष्णु और महेश भी माना जाता है क्योंकि गुरू विद्यार्थियों में सृजनशीलता का निर्माण करते हैं,

गुरू ही विद्यार्थियों के पोषक होते हैं तथा शिक्षक ही चाणक्य रूप में समाज कल्याण के लिए शिव का रूप धारण करते हैं। इतिहास साक्षी है, जब –जब धर्म की राजनीति सामने आयी है उसी समय राजनीति में धर्म का पाठ शिक्षक की ही कलम से निकला है। विद्यार्थी द्वारा एक प्रधानाचार्या की हत्या के पीछे का कारण कुछ न कुछ तो अवश्य ही होगा। **परंतु दोष किसे दें ?**

पाश्चात्य देशों में विद्यार्थी द्वारा शिक्षक को गोली मार देना अथवा उनका अपमान कर देना एक सामान्य सी बात है। परंतु विगत वर्षों में भारत में भी ऐसे कुकृत्य सामने आए हैं। कहीं पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण के कारण ऐसा तो नहीं ? हमारी शिक्षा पद्धति में ऐसा क्या बदलाव आ गया कि गुरू– शिष्य परंपरा ही समाप्त होने के कगार पर आ गयी ? शिक्षा का व्यवसायीकरण, शिक्षकों का पेशेवराना अंदाज एवं स्वार्थपरायणता तो कहीं इस

समस्या का मूल तो नहीं ? हमारे समाज में सर्वथा सुलभ नौकरी यदि कोई है तो वह है शिक्षक की नौकरी। पढ़ाना सबसे आसान काम है। **" पर उपदेश कुशल बहुतेरे"** दूसरे को उपदेश देना बहुत आसान है। मेरा मानना है कि हमारे देश में शिक्षा– शिक्षण पर बहुत अधिक ध्यान नहीं दिया जा रहा है। शिक्षकों के ऊपर हम जितना व्यय करेंगे परिणाम उतने ही बेहतर होंगे। इसी के साथ विद्यार्थियों में गुणों को विकसित करने पर भी बल दिया जाना चाहिए।

"काक चेष्टा बको ध्यानम्, श्वान निद्रा तथैव च

अल्पाहारी,गृहत्यागी विद्यार्थी पंच लक्षणम्।।"

उपर्युक्त लक्षणों से सर्वथा हीन अधिकतर विद्यार्थियों को पढ़ाना दोधारी तलवार पर चलने का काम है परंतु असंभव कदापि नहीं। अधिकतर संभ्रांत तथा कुलीन परिवारों से संबंध रखने वाले विद्यार्थियों को भविष्य के बारे में अधिक सोचने की आवश्यकता नहीं है। प्रायः उनके सुनिश्चित भविष्य का प्रभाव उनकी शिक्षा में झलकता है। जितना सुनिश्चित भविष्य उतनी ही शिक्षा में कम रूचि। पर इसका मतलब यह कदापि नहीं कि ऐसे बच्चों को अनदेखा किया जाए। विद्यार्थियों को व्यस्त रखने का कौशल किसी भी शिक्षक को कक्षा में सफल बना सकता है। उनको प्रोत्साहित करने की कला बच्चों में दोगुनी शक्ति का संचार कर देती है। शिक्षकों में सृजनात्मकता, अभिनव कौशल में महारथ, लचीलापन, अनुकूलन क्षमता तथा विद्यार्थियों के स्वभाव तथा उनकी त्वरित प्रतिक्रिया को जानने की क्षमता होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में शिक्षकों को **'स्मार्ट'** और **'प्रोएक्टिव'** होना चाहिए। प्रश्न अब भी अनुत्तरित है कि **दोष किसे दें ?** दोष का ठीकरा किस पर फूटेगा यह तो समय ही बताएगा!

परंतु शिक्षक होने के नाते हम सभी को अपनी जिम्मेदारियाँ सुनिश्चित करनी होंगी। समाज निर्माण में अपना योगदान देना होगा। अपने कर्त्तव्यों के निर्वहण में मंथर गति को त्यागना होगा। नकारात्मक विचारों को सकारात्मक चिंतन से जय करना होगा। शिक्षा को एक अभियान से जोड़ना होगा जिससे देश में ऊर्जावान, क्रियाशील तथा वैश्विक नागरिकों से भरा– पूरा भारत पुनः विश्व गुरू की महिमा से मंडित हो सके।

हमें अपनी जड़ों से जुड़कर आधुनिक परिवेश में भी अपनी संस्कृति की रक्षा करते हुए उससे गौरवान्वित होना चाहिए। हमें नयी पीढ़ी को शिक्षित करने का सौभाग्य मिला है, जिस पर देश की दृष्टि टिकी हुई है। हमें देश का भविष्य और भावी पीढ़ी के लिए बुनियादी तौर पर कार्य करना है।

आइए एक साथ मिलकर अपनी विषय–वस्तु (विद्यार्थी) पर ध्यान केंद्रित करें और एक आदर्श विद्यार्थी की अवधारणा को समाज में पुनर्जीवित करने का प्रयास करें। शिक्षा का उन्नयन एवं उसके स्तर का अनुमान समाज में होने वाली गतिविधियों को देखकर अनायास ही समझा जा सकता है। शिक्षा– जगत में गुरू– शिष्य का संबंध अत्यंत पवित्र एवं सनातन है, इस संबंध को संजीवनी बूटी की आवश्यकता है और यह बूटी हम दोनो (गुरू और शिष्य) के मानस में चिरकाल से प्रतिष्ठित है परंतु ज़रूरत है उसके प्रयोग की, इसके प्रयोग से यह संबंध अनंत और अमरत्व को प्राप्त होगा– इसमें कोई संशय नहीं।

डॉ0 अभिनव शुक्ल
प्रधानाध्यापक
बिरला पब्लिक स्कूल, पिलानी।

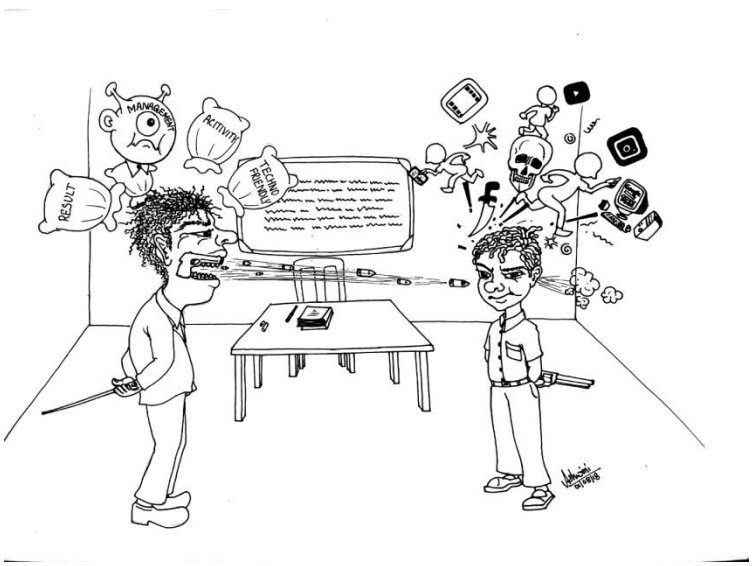

संपादक मंडल

मुख्य संरक्षक – प्रधानाचार्य बी.पी.एस.

मुख्य संपादक – श्री अतुल कुमार मिश्र , विभागाध्यक्ष हिंदी–विभाग

तकनीकी सहयोग – श्री अनिल बराड़

रेखांकन – श्रीमती अश्विनी केदार

प्रकाशित – डॉ अभिनव शुक्ल, प्रधानाध्यापक ,मध्य–विभाग

संपर्क सूत्र – विद्या निकेतन, बिड़ला पब्लिक स्कूल, पिलानी – 333031, सुझाव – **hmmiddle@bpspilani.edu.in**